ऑडियो विडियो रिकॉर्डिंग एवं कलाकार विवरण पत्र

फोल्डर नः- 02

ट्रैक नः- Z000M00 16

ट्रैक समयावधिः- :1:18:2

पताः- गाँव बड़नावा चारणान् तेह- पचपद्रा जिला- बाड़मेर

कलाकार का नामः- सुभान खाँ

पिता का नामः- खमेखाँ

सहायक कलकारः-

विडियों रिकॉर्डिंग समय

विषयः- गाथा (राजा भारथड़ी)

विशेष विवरणः-

दिनांकः- 13/06/2021

स्थानः- बड़नावा चारणान्

गायन/वादनः- NO

यह गाथा 'राजा भारथड़ी' नाम से प्रसिद्ध है। यह श्रृंगार रस की गाथा राजा भारथड़ी और उसकी पत्नी पिंगलया के संयोग वियोग पर आधारित है।

वर्णन :- राजा भारथड़ी और पिंगलया रानी के बीच अत्यन्त प्रेम था। दोनो की विवाह हुए कुछ महीने बीते है तथा दोनों के प्रेम आनन्दीत है। राजा भारतड़ी के दरबार एक नृत्य करने वाली लड़की पर एक महराज मोहीत हो जाता है तथा उनको पाने के लिए एक मायावी शक्ति से हार बनाता है जिससे वह उसे पा सके। महराज राजा की सभा में उपस्थित होता है तो वह लड़की नृत्य करती है तथा महराज वह मोतीयों का हार उस लड़की को दान कर देता है। लेकिन वह लड़की उस हार को रानी पिंगल्या को दे देती है। एक दिन राजा भारथड़ी और रानी पिंगल्या अपने मैं बैठे थे तो रानी राजा से मृग का मांस लाने को कहती है तथा राजा कहता है कि मैं शिकार जाऊँगा बंकीबेड़लो मृग मारकर ले आऊगा लेकिन रानी कहती है कि उस मृग को मत मारना वह एक सौ हिरणीयों बीच एक ही मृग है आप हिरणी को मार देना लेकिन राजा कहता है कि मैं स्त्री पर वार नहीं कर सकता और सुबह जंगल में शिकार के लिए जाता है बंकीबेड़लो मृग को मार देता है और मृग को मारने से पहले मृग उसे कहता है कि मेरी खाल भोलेनाथ को देना तो वह उसे मारकर वापिस आ रहा होता है तो राज भोलेनाथ को देखता है और उसके पास जाता है तो भोलेनाथ उस मरे हुए मृग को देखकर राजा भारथड़ी से कहता है कि पापी मुझसे दूर रे मेरे नजदीक मत आ और कहता है बेचार मृग को म्यू मारा। यह सुनकर राजा कहता है कि मुझसे गलती हो गई और मुझे माफ करों। भोलेनाथ मृग पर भभूती डालता है तो वह उठकर भाग जाता है। अब राजा भारथड़ी भोलेनाथ

से कहता है कि मुझे आपका शिष्य बना लो लेकिन भोलेबाबा कहते की तुम राजा हो परीवार वाले हो यह सब कैसे त्यागोगे और मैं तुमको अपना शिष्य नहीं बना सकता फिर भी राजा भोलेनाथ से बार-बार प्रर्थना है तो भोलेनाथ कहते हैं कि पहले अपनी पत्नी के हाथ से भिक्षा लेकर आओ तथा राजा भारथड़ी अपनी पत्नी पिंगलया के पास जाकर भिक्षा मांगता है तो पिंगलया भिक्ष डालने से मना कर देती और कहती है अभी शादी किये कुछ ही महीने हुए और न कोई संतान प्राप्त हुई और आप मुझे छोड़कर साधु बन रहे हो। पूरा परीवार राजा को बहुत समझाता है लेकिन वह अन्त में पिंगलया को माँ कह देता और कैसे भी करके पिंगलया से भिक्षा लेकर अपना घर छोड़कर चला जाता है। अब रानी अकेली हो जाती तथा यह जो होता है उस मायावी हार के कारण होता है और मायावी हार का असर रानी पिंगलया पर होने लगता है और वह महराज के पास चली जाती है तो अब वह रोज महराज के पास जाती है उसे महराजा की मायावी शक्तियाँ सब कुछ भुला देती है। अब राजा भारथड़ी के जाने के बाद उसका छोटा भाई वीर विक्रम देव भी अपना घर छोड़कर कवरु देश वहां जाकर चौदवी विद्या हासिल करके वापिस आता है तो उसे पता चलता है कि रानी पिंगलया महराज के पास जाती है तो वह पता लगाता है कि रानी महराज के पास कैसे जाने लगी तो वह राजदरबार में नाचने वाली लड़की विक्रम को बतती है कि रानी पिंगलया के गले में जबतक मायावी हार रहेगा तबतक वह महराज के वस में रहेगी। तो एक दिन विक्रमदेव उस नाचेवाली लड़की को पिंगलया से पहले भेजता है और स्वंय छुप कर बैठ जाता है वह उसे शराब पिलाती है तो वह मदहोस हो जाता है उस समय वीर विक्रम आता है और तलवार से सिर धड़ से अलग कर देता है तथा थोड़ी देर में पिंगलया भी वहां आजाती है तो विक्रम देव उस मायावी हार को निकालकर फेंक देता है तो पिंगलया फिर

पहले जैसी हो जाती है। अब विक्रमदेव अपने भाई राजा भारथड़ी को वापिस अपने घर ले जाता है। अब सब कुछ ठीक हो जाता है क्योंकि जो कुछ भी हुआ था वह उस वियोगी टार के कारण हुआ था। राजा भारथड़ी फिर से अपना राजकाज सम्भालता है। और वीर विक्रम देव हर किसी के दुखों को काटने लगता है।